Received
16/3/2002

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

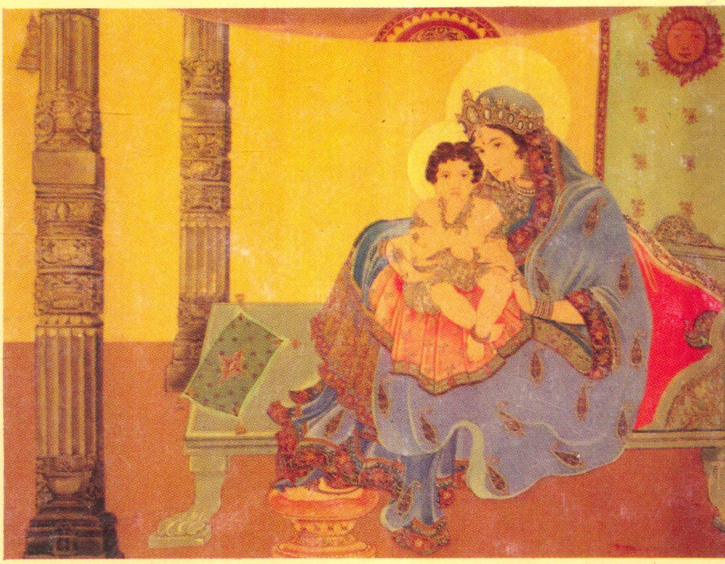

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

वर्ष : २५ अंक : ११
फरवरी २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २५ अंक - ११, फरवरी २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007 Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

॥ जैन भवन ॥

संपादन
श्रीमती लता बोथरा

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	चन्देरी (मध्यप्रदेश)	श्री चम्पालाल सिंघई **पुरन्दर**	५१५
२.	जैन दर्शन नास्तिक नहीं	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	५१९
३.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	५२४
४.	मलयासुन्दरी		५३३

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

चन्देरी (मध्यप्रदेश)

श्री चम्पालाल सिंघई *"पुरन्दर"*

मध्यभारत में जैन धर्मका प्रचार प्राचीन काल से रहा है। इस प्रदेश में मनोहर जिनबिम्ब और कलापूर्ण चैत्यालय यत्र-तत्र प्रचुरता से पाये जाते हैं। सिद्धक्षेत्र श्रमणगिरि (सोनागिर) तथा अतिशय क्षेत्र देवगढ़, अहार, पम्पासर (पपौरा), तपोवन (थूबोन) आदि इस प्रान्त की शोभा वृद्धि कर रहे हैं। इन सबके मध्य में चन्देरी पुरातत्त्व एवं इतिहास की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थल है।

यह नगर विन्ध्याचल के अञ्चल में २४°.४३' उत्तर अक्षांश तथा ७८° ११' पूर्वदेशांशपर बसा हुआ है। इससे केवल ५ मील पूर्वकी ओर वेत्रवती (बेतवा) नदी बहती है।

आदिपुराण में लिखा है कि भगवान् आदिनाथ का समवशरण चन्देरी भी आया था। किंवदन्तीके अनुसार पौराणिक युग में यदुराज श्रीकृष्णके प्रतिद्वन्द्वी चेदिराज शिशुपाल की राजधानी जिस स्थान पर थी, उसे अब बूढ़ी चन्देरी कहते हैं। जो वर्तमान चन्देरी से उत्तर-पश्चिम १० मील पर है।

वर्तमान नगर प्रतिहार्य वंशीय क्षत्रिय राजा कीर्तिपाल ने विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी में बसाया था। उसने कीर्तिदुर्ग, कीर्तिसागर और कीर्तिनारायण मन्दिर भी वहाँ निर्माण कराये।

इतिहासकार अलबरूनीने १०३० ईस्वी में और यात्री इब्नबतूताने १०३६ ई० में चन्देरी का उल्लेख किया है। प्रथम मुसलमानी आक्रमण १०५४ ई० में बादशाह बलवन ने किया, दूसरा अलाउद्दीन खिलजीने।

महाकवि तुलसीदासजीने जिस दोहा चौपाई की पद्धति में अवधी भाषा में रामचरितमानस की रचना की, उस शैली के प्रवर्तक और अवधी के कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ ***पद्मावत*** में चन्देरी का उल्लेख किया है। (दहिने विदर, चन्देरी बाँये)

देहली और मालवे के सुलतान बहुत वर्षो तक यहाँ सूबेदार रखते रहे। चित्तौड़ के प्रसिद्ध राणा संग्राम सिंह (साँगा) ने १५२० ई० में राजा मेदिनीरायको हराया। इस अवसर पर सैकड़ों राजपूत वीरांगनाओं ने जौहर किया। इसका स्मारक कीर्तिदुर्गपर जौहरताल के तटपर महाराज जीवाजी राव सिन्धिया के राज्यकाल में (वि० सं० १९९२) बनवाया गया है।

मुगल सम्राट् जहाँगीर को युवराजावस्था में ओरछा-नरेश मधुकर शाह के पुत्र इन्द्रजीतसिंह ने सैनिक सहायता की थी, जिसके कृतज्ञता स्वरूप मधुकरशाह के सिंहासन पर इन्द्रजीतसिंह को बिठाकर उनके बड़े भाई रामशाह को जहाँगीर ने सन् १६०५ ई० में चन्देरी राज्य दिया। उस समय इस राज्य की वार्षिक आय बाईस लाख रुपया थी और इसमें अठारह परगने थे। इस प्रकार बुन्देलों के शासन का सूत्रपात हुआ। जब बादशाह औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् अन्य प्रान्तों के शासक स्वतंत्र नरेश बन गये तब चन्देरी के बुन्देला दुर्जनसिंह भी १७०७ ई० में महाराज बन गये। उनके वंशज दुर्बल और विलासी मोर प्रहलाद के ऊपर सन् १८१५ ई० में ग्वालियर-नरेश दौलतराव सिन्धिया के सेनापति कर्नल जीन बेपटिस्ट (जान बत्तीस) ने आक्रमण किया और यह राज्य मराठा साम्राज्य का एक भाग बन गया। परन्तु मोरप्रहलाद के वीर पुत्र मर्दनसिंह उत्पात करते रहे जिससे विवश होकर सन् १८३८ में सिंधिया जानकोजीराव ने बुन्देलों से सन्धि की जिसके अनुसार ५२७८८०) रुपयों की आय का प्रदेश तीन भागों में विभाजित किया गया। जिनमें से दो सिन्धिया को और एक बुन्देलों को मिला। राजधानी चन्देरी सिन्धिया को मिलने के कारण राजा मर्दनसिंह ने अपनी बैठक बानपुरमें रक्खी और सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में वे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के दाहिने हाथ रहे। वे सागर के अभियान में सर ह्यू रोज द्वारा पराजित होकर बन्दी हुए और अंग्रेजों द्वारा उन्हें एक सहस्र रु० मासिक पेंशन मिलती रही जो घटते-घटते राजा सावन्त सिंह के समय में ३००) रु० मासिक रह गई।

ग्वालियर राज्य के नवनिर्मित मध्य भारत प्रदेश में सम्मिलित हो जाने से अब चन्देरी मध्यभारत में है। इस नगर में सम्राट अकबर के राज्य काल में ***आइने अकबरी*** के अनुसार, कई लाख मनुष्य थे। अब केवल सात सहस्र जन संख्या है।

कीर्तिदुर्ग पर नौखंडा महल, हवामहल, गिलौआ ताल और सिन्धिया की कोठी (सं० १९६७) दर्शनीय हैं।

नगर के उत्तर की ओर २ मीलपर राजा देवीसिंह बुन्देला ने सिंहपुर ग्राम बसाया और एक तालाब बनवाया, जिसके किनारे लगी हुई पहाड़ी पर एक सुन्दर महल संवत् १७१३ में बनवाया। उनके पुत्र राजा दुर्गसिंह ने चन्देरी से ५ मील पूर्व की ओर से अपनी रानी पंचमकुमारी के नाम पर पंचम नगर बसाया। जहाँ सं० १७३५ में एक सुन्दर महल का निर्माण कराया और राजा दुर्जनसिंह ने १७५५ में चन्देरी से दक्षिण में २ मील पर रामनगर बसाया, जहाँ एक तालाब के किनारे भव्य राज्यप्रसाद का भी निर्माण कराया। उपर्युक्त राजभवन मुगल और राजपूत कला के सम्मिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। इन महलों का जीर्णोद्वार सन् १९२५ ई० में महाराज माधवराव सिन्धिया ने कराया।

बुन्देला राजाओं की अन्य कृतियाँ हैं परमेसरताल और उसके तटपर लक्ष्मणजी का मन्दिर, बत्तीसी बावड़ी (सं० १५४२), हरकुंड आदि जलाशय और नरसिंह मन्दिर, जागेश्वरी मन्दिर आदि अनेक देवालय!

मुसलमानों ने अनेक मसजिदें और मकबरे बनवाये-जिनमें शाहजादी का रोजा, बड़ा मदरसा, जामा मसजिद, ईदगाह (सन् १४९४), झँझरया पीर आदि प्रसिद्ध हैं।

नगर एक पहाड़ीपर बसा हुआ है, जो समुद्रतल से लगभग १५०० फीट ऊँची है। एक ओर एक पहाड़ी है जो नगर से २०० फीट ऊँची है, इसे प्राचीनकाल में ***चन्द्रगिरि*** कहते थे, इसी पर कीर्तिदुर्ग का निर्माण हुआ है। नगर की शेष तीनों दिशाओं में कोट हैं, जिसमें अनेक विशाल तोरण हैं जिनमें प्रमुख ***देहली द्वार*** है जो सन् १४११ में बना।

नगर के वर्तमान भूमिपति कुँवर कमलसिंह जी के पूर्वज चौधरी फौजदार हिरदेशाह मर्दनसिंह के कामदार संघाधिपति श्री सवाईसिंहजी ने संवत् १८९३ में श्रमणगिरि पर गजरथोत्सव कराके चन्देरी में भारतविख्यात चौबीसी मन्दिर का निर्माण कराया, जिसमें चौबीस शिखरयुक्त कोठरियों में २४ तीर्थंकरों की शास्त्रोक्त वर्ण की मनोज्ञ मूर्तियाँ विराजमान हैं। प्रत्येक का माप समान है।

नगर से १ मील दक्षिण में खंदारजी है। ***खंदार*** नाम पड़ने का कारण पहाड़की कन्दराओं में मूर्तियों का निर्माण कराया जाना है। एक मूर्ति तो २५ फीट ऊँची है जिसका अधिकांश भाग बरसाती पानी से कट गया है। इसीलिए उसपर कोई शिलालेख न मिल सका। प्राप्त हुए अनेक शिलालेखों में प्राचीनतम वि० सं० १२८३ का है जिसके निर्माता का नाम संभवत: अनन्तशाह है। भट्टारक पद्मकीर्ति का स्मारक यहाँ बना है जिसमें चरणपादुकाओं पर सं० १७३६ वि० लिखा है। सकलकीर्ति, यशकीर्ति आदि भट्टारकों की छतरियाँ यहाँ बनी हैं। कुछ मूर्तियाँ बीच पहाड़ में पृथ्वी से ५० फीट ऊँचाई पर काटकर बनाई हुई है जो दुस्साध्य कार्य है। उनके रक्षार्थ एक विशाल चबूतरा २ वर्ष पहिले बनवाया गया है।

जैनधर्मकी प्राचीनता के द्योतक अनेक भग्नावशेष बूढ़ी चन्देरी में हैं। मूर्तियाँ अतिशय मनोज्ञ तथा अष्ट प्रतिहार्य और यक्ष यक्षिणी संयुक्त देशी पाषाणकी अनुपम कलापूर्ण निर्माण की गई है। मूर्तियों के शिल्पकी प्रशंसा पुरातत्त्वविदों ने मुक्त कंठ से की है। ललित पुर स्टेशन पर इन मूर्तियों के चित्र पुरातत्त्व विभाग की ओर से लगवाये गये हैं। मूर्तियों पर कोई ऐसा लेख अभी तक नहीं मिला जिससे निर्माणकर्ता तथा निर्माण काल का पता चल सके। केवल एक लेख अब तक प्राप्त हुआ है जिसकी प्रतिलिपि ***जैन मित्र*** में प्रकाशित कराई गई है। परन्तु उसे पढ़कर किसी विद्वान ने उसका अभिप्राय अब तक हमें नहीं भेजा जो इतिहास-रक्षा की दृष्टि से आवश्यक है।

जैन दर्शन नास्तिक नहीं

डा० मंगलदेव शास्त्री,

मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति बहिर्मुख और ऐन्द्रियक है। वह अपने दैनिक जीवन में अपनी साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति के दृश्य जगत के आपाततः प्रतीयमान स्वरूप से ही संतुष्ट रहता है। जीवन में कठिन परिश्रम एवं परिस्थितियों के आने पर ही उसके मन में समस्याओं का उदय होता है और जगत के आपाततः प्रतीयमान रूप से जिसमें कि उसे कई प्रकार की उलझनें प्रतीत होती हैं, संतुष्ट न रह कर उसके वास्तविक स्वरूप के जानने के लिए और उसके द्वारा अपनी उलझनों के समाधान के लिए प्रवृत्त होता है। इसी तथ्य का प्राचीन ग्रंथों में :—

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयंभू -
स्तस्मात् पराङ पश्यति नान्तरात्मन् ।
कश्चिद् धीरः प्रत्यागात्मन्यवैक्षद्
आवृतचक्षुरमृतत्वमिच्छिन् ।। **—कठोप० १।१।१**

इस प्रकार के शब्दों में प्रायः वर्णन किया गया है।

वास्तव में दार्शनिक दृष्टि का यही सूत्रपात होता है। दार्शनिक दृष्टि और तात्विक दृष्टि दोनों को समानार्थक समझना चाहिए।

व्यक्तियों के समान जातियों के जीवन में भी दार्शनिक दृष्टि सांस्कृतिक विकास की एक विशेष अवस्था में ही उद्भूत होती है। भारतीय संस्कृति की परम्परा की अति प्राचीनता का बड़ा भारी प्रमाण इसी बात में है कि उसमें दार्शनिक दृष्टि की परम्परा अति प्राचीन काल से ही दिखायी देती है। वास्तव में उसका प्रारंभ कब हुआ इसका काल-निर्धारण करना अत्यन्त कठिन है।

वेदों का विशेषतः ऋग्वेद का काल अति प्राचीन है, इसमें सन्देह नहीं। उसके नासदीय सदृश सूक्तों और मंत्रों में उत्कृष्ट दार्शनिक विचारधारा पाई जाती है। ऐसे युग के साथ, जबकि प्रकृति के कार्यनिर्वाहक तराद्देवताओं की स्तुति आदि के रूप में अत्यन्त जटिल वैदिक कर्मकांड ही आर्य जाति का परम ध्येय हो रहा था, उपर्युक्त उत्कृष्ट दार्शनिक विचारधारा की संगति बैठाना कुछ कठिन दिखायी देता है। ऐसा हो सकता है कि उस दार्शनिक विचारधारा का आदि स्रोत वैदिक धारा से पृथक या उससे पहिले का हो।

ब्रह्मसूत्र शंकरभाष्य में कपिल-सांख्य दर्शन के लिए स्पष्टतः अवैदिक कहा गया है। इस कथन में हमें तो कुछ ऐसी ध्वनि प्रतीत होती है कि उसकी परम्परा प्राग्वैदिक या वैदिकेतर हो सकती है। जो कुछ भी हो ऋग्वेद संहिताएं जो उत्कृष्ट दार्शनिक विचार अंकित हैं, उनकी स्वयं परम्परा और भी प्राचीनतर होना ही चाहिए।

जैन दर्शन की सारी दार्शनिक दृष्टि वैदिक दार्शनिक दृष्टि से स्वतंत्र ही नहीं भिन्न भी है। इसमें किसी को सन्देह नहीं हो सकता। हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि उपर्युक्त दार्शनिक धारा को हमने ऊपर जिस प्राग्वैदिक परम्परा से जोड़ा है, मूलतः जैनदर्शन भी उसी के स्वतंत्र विकास की एक शाखा हो सकता है। उसकी सारी दृष्टि से तथा उसके कुछ पुद्गल जैसे विशिष्ट पारिभाषक शब्दों से इसी बात की पुष्टि होती है।

जैनदर्शन का विशेष महत्व— परन्तु जैनदर्शन का अपना विशेष महत्व उसकी प्राचीन परम्परा को छोड़कर अन्य महत्व के आधारों पर भी है। किसी भी तात्विक विमर्श का विशेषतः दार्शनिक विचार का महत्व इस बात में होना चाहिए कि वह प्रकृत वास्तविक समस्याओं पर वस्तुतः उन्हीं की दृष्टि से किसी प्रकार के पूर्वाग्रह के बिना विचार करें। भारतीय अन्य दर्शनों में शब्द प्रमाण का जो प्रामुख्य है वह एक प्रकार से उनके महत्व को कुछ कम ही कर देता है। उन दर्शनों में ऐसा प्रतीत होता है—विचारधारा की स्थूल रूपरेखा का अंकन तो शब्द प्रमाण कर देता है और तत्द्दर्शन केवल उसमें अपने-अपने रंगों को ही भरना चाहते हैं इसके विपरीत जैन-दर्शन में

ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई बिलकुल साफ स्लेट पर लिखना शुरू करता है। विशुद्ध दार्शनिक दृष्टि में इस बात का बड़ा महत्त्व है। किसी भी व्यक्ति में दार्शनिक दृष्टि के विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वह स्वतंत्र विचारधारा की भित्ति पर अपने विचारों का निर्माण करे और परम्परा निर्मित पूर्वाग्रहों से अपने को बचा सके।

उपर्युक्त दृष्टि से इस दृष्टि में मौलिक अन्तर है। पूर्वोक्त दृष्टि में दार्शनिक दृष्टि शब्द-प्रमाण के पीछे-पीछे चलती है और जैन दृष्टि में शब्द प्रमाण के दार्शनिक दृष्टि का अनुगामी होना पड़ता है।

इसी प्रसंग में भारतीय दर्शन के विषय में परम्परागत मिथ्या भ्रम का उल्लेख करना भी हमें आवश्यक' प्रतीत होता है। कुछ काल से लोग ऐसा समझने लगे है कि भारतीय दर्शन की आस्तिक और नास्तिक नाम से दो शाखायें हैं। तथाकथित ***वैदिक*** दर्शनों को आस्तिक दर्शन और जैन-बौद्ध जैसे दर्शनों को नास्तिक दर्शन कहा जाता है। वस्तुतः यह वर्गीकरण निराधार ही नहीं, नितान्त मिथ्या भी है। आस्तिक और नास्तिक शब्द ***अस्ति नास्ति दिष्टं मतः*** (पा० ४।-४।६०) इस पार्णिनि सूत्र के अनुसार बने हैं। मौलिक अर्थ उनका. यही था कि परलोक (जिसको हम दूसरे शब्दों में इन्द्रियातीत तथ्य भी कह सकते हैं) की सत्ता को माननेवाला ***नास्तिक*** कहलाता है। स्पष्टतः इस अर्थ में जैन और बौद्ध जैसे दर्शनों को नास्तिक कहा ही नहीं जा सकता। इसके विपरीत हम तो यह समझते है कि शब्द प्रमाण को निरपेक्षता से वस्तुत्व पर विचार करने के कारण दूसरे दर्शनों की अपेक्षा उनका अपना एक आदरणीय वैशिष्ट्य ही है।

जैन दर्शन की देन— भारतीय दर्शन के इतिहास में जैन दर्शन की अपनी अनोखी देन है। दर्शन शब्द का फिलासफी के अर्थ में कब से प्रयोग होने लगा है, इसका तत्काल निर्णय करना कठिन है, तो भी इस शब्द को इस अर्थ में प्राचीनता के विषय में सन्देह नहीं हो सकता। तत्तद् दर्शनों के लिए दर्शन शब्द का प्रयोग मूल में इसी अर्थ में हुआ होगा कि किसी भी इन्द्रियातीत तत्व के परीक्षण में तत्तद् व्यक्ति की स्वाभाविक रुचि, परिस्थिति

या आकारिता के भेद से जो तात्विक दृष्टि भेद होता है उसी को दर्शन शब्द से व्यक्त किया जाता है। ऐसी अवस्था में यह स्पष्ट है कि किसी तत्व के विषय में कोई भी तात्विक दृष्टि ऐकान्तिक नहीं हो सकती। प्रत्येक तत्व में अनेकरूपता स्वभावतः होनी चाहिए और कोई भी दृष्टि उन सबका एक साथ तात्विक प्रतिपादन नहीं हो सकती। इसी सिद्धांत को जैन दर्शन की परिभाषा में ***अनेकान्त दर्शन*** कहा गया है। जैन दर्शन का तो यह आधारस्तंभ है ही, परन्तु वास्तव में प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा के लिए भी इसको आवश्यक मानना चाहिए। बौद्धिक स्तर पर इस सिद्धांत को मान लेने से मनुष्य के नैतिक और लौकिक व्यवहार में एक महत्व का परिवर्तन आ जाता है। चारित्र्य ही मानव के जीवन का सार है। चारित्र्य के लिए मौलिक आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य एक ओर तो अभिमान से अपने को पृथक रखे, साथ ही हीन भावना से भी अपने को बचाये। स्पष्टतः यह मार्ग अत्यन्त कठिन है। वास्तविक अर्थों में जो अपने स्वरूप को समझता है, दूसरे शब्दों में आत्मसम्मान करता है, और साथ ही दूसरे के व्यक्तित्व को भी उतना ही सम्मान देता है, वही उपर्युक्त दुष्कर मार्ग का अनुगामी बन सकता है। इसीलिए सारे नैतिक समुत्थान में व्यक्ति का समादर एक मौलिक महत्व रखता है। जैन दर्शन के उपयुक्त अनेकान्त दर्शन का अत्यन्त महत्व इसी सिद्धान्त के आधार पर है कि उसमें व्यक्तित्व का सम्मान निहित है।

जहाँ व्यक्तित्व समादर होता है वहां स्वभावतः साम्प्रदायिक संकीर्णता, संघर्ष या किसी भी छल, जाति, जत्य, वितण्डा आदि जैसे असदुपाय से वादिपराजय की प्रवृत्ति नहीं रह सकती। व्यावहारिक जीवन में भी खंडन के स्थान में समन्वयात्मक निर्माण की प्रवृत्ति ही वहां रहती है। साध्य की पवित्रता के साथ साधन की पवित्रता का महान् आदर्श भी उक्त सिद्धान्त के साथ ही रह सकता है। इस प्रकार अनेकान्त दर्शन नैतिक उत्कर्ष के साथ-साथ व्यवहार शुद्धि के लिए भी जैन दर्शन की एक महान देन है।

विचार जगत में अनेकान्त दर्शन ही नैतिक जगत में आकर अहिंसा के व्यापक सिद्धांत का रूप धारण कर लेता है, इस लिये जहाँ अन्य दर्शनों

में परमत खंडन पर बड़ा बल दिया गया है, वहां जैन दर्शन का मुख्य ध्येय अनेकान्त सिद्धान्त के आधार पर वस्तुस्थिति मूलक विभिन्न मतों का समन्वय रहा है। वर्तमान जगत की विचारधारा की दृष्टि से भी जैन दर्शन के व्यापक अहिंसामूलक सिद्धान्त का अत्यन्त महत्व है। आजकल के जगत की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि अपने-अपने परम्परागत वैशिष्टय को रखते हुए भी विभिन्न जातियां एक दूसरे के समीप आवें और उनमें एक व्यापक मानवता की दृष्टि का विकास हो। अनेकान्त सिद्धांतमूलक समन्वय की दृष्टि से ही यह हो सकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि न केवल भारतीय दर्शन के विकास का अनुगमन करने के लिए, अपितु भारतीय संस्कृति के स्वरूप के उत्तरोत्तर विकास को समझने के लिए भी जैन दर्शन का अत्यन्त महत्व है। भारतीय विचारधारा में अहिंसावाद के रूप में अथवा परमतसहिष्णुता के रूप अथवा समन्वयात्मक भावना के रूप में जैन दर्शन और जैन विचारधारा की देन जो है उसको समझे बिना वास्तव में भारतीय संस्कृति के विकास को नहीं समझा जा सकता।

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

(घ) **मोक्ष —** सद्गृहस्थ हर कार्य में मोक्ष केन्द्र को ध्यान में रखें। कोई भी कार्य मोक्ष की कामना से ही करें। धर्म शास्त्र में भी लिखा है कि सद्गृहस्थ का हर कार्य मोक्ष धर्मो ही होना चाहिए।

अर्थ और काम भी एक सामाजिक धर्म है। इन दोनों से समाज में अनर्थ और अनाचार का कम प्रभाव पड़ता है। इन दोनों को जब धर्म से अलग कर दिया जाता है, तब मानव-मानव नहीं रह कर पिशाच बन जाता हैं। वे चारों जबतक है तब तक जीवन परम शांति का कारण बनता है। पर असत् और हिंसक रूप धारण करते ही अनर्थ का कारण बन जाता है।

हमारे दुर्भाग्य से पाश्चात्य संस्कृति हमारे देश की प्राचीन संस्कृति को नष्ट करने के लिए रोज नई-नई सामग्री देकर भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा से हमें भटका रही है।

संस्कृति का विकास दया, करुणा और सदाचार में निहित है।

इस अवसर्पिणीकाल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने भी मोक्ष मार्ग बताने से पूर्व पुरुषों को ७२ कला और स्त्री को ६४ कला सिखायी सर्वप्रथम कुम्भकार की कला बताकर कुंभ बनाये। आज भी कोई कार्य के शुभारंभ में सर्व प्रथम कुंभ की स्थापना होती है। भगवान ऋषभदेव ने अनुक्रम से कृषि, व्यापार, चिकित्सा पशुपालन, युद्ध, लेखन आदि सभी प्रकार की सामाजिक कार्य की व्यवस्था करके अर्थ, काम की शिक्षा देकर धर्म और मोक्ष का मार्ग बताया।

देश और संस्कृति के विपरीत जीवन जीने से समाज में अराजकता फैलती है। इससे व्यक्ति को तो दुःखी होना ही पड़ता है, साथ-साथ समाज और देश भी रसातल में पहुँच जाता है।

आज सम्पूर्ण विश्व में अनैतिकता का झंझावात चल रहा है। इससे देश में बहुत ही तेजी से अराजकता बढ़ रही हैं। इस स्थिति से देश को बचाने

के लिए हमें स्वयं से सुधरना प्रारंभ करना होगा। व्यक्ति के समूह को ही समाज कहते है। व्यक्ति सुधरने पर समाज स्वयमेव सुधर जायेगा।

घर के सभी सदस्य सभ्य जीवन के विकास के उक्त नियमों का पालन करें या न करे हमारा आचरण और भावना अच्छी होगी तो अन्य स्वयमेव अनुकरण करने लगेंगे। समाज को सुव्यवस्थित बनाये रखने के लिये मर्यादा परमौषधि है। मर्यादा ही व्यक्ति को गन्तव्य स्थान तक पहुँचाती है। गंगा अगर हिमालय से सागर तक पहुँची तो उसका सबसे बड़ा सहायक मर्यादा (किनारा) है। कल्पना करें ...गंगा के दोनों ओर किनारा न होता तो गंगा को सागर तक पहुँचना असंभव था। इतना ही नहीं अन्य अनेक ग्राम-नगर भी नष्ट हो जाते।

क्षणजीवी या तुरन्त फलदायी कार्य के लिये मर्यादा को तोड़ना अन्याय है। हमें मर्यादा भंग करके समाज को तोड़ने का कार्य नहीं करना चाहिए। मर्यादा का पालन करने के कारण ही दशरथ पुत्र रामचन्द्र मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। वे अपना सब कुछ बलिदान देकर मर्यादा का पालन किये। त्यागी वर्ग साधु साध्वी को भी अपनी मर्यादा का पालन पूर्ण रूप से करना चाहिए। मात्र साधु वेशधारी बनकर साधु जीवन की आड़ में अनैतिक कार्य करना समाज के लिए अन्याय है। ऐसे वेशधारी साधु को विनय पूर्वक समझाने का प्रयत्न करना चाहिए। इतना करने पर भी वे न समझे तो उनसे साधु का वस्त्र लेकर गृहस्थ बना देना चाहिए।

विदेशी शिक्षा पद्धति, नाइट क्लब, डिस्कोडान्स, सिनेमा, टी.वी., ब्लु फिल्म, अर्न्तजातीय, अर्न्तराष्ट्रीय विवाह आदि, आर्य देश की मर्यादा के लिए धातक सिद्ध हो रहा है।

आज समाज में तीव्रगति से गर्भपात, विवाह विच्छेद, विभक्त परिवार, शिशुशाला, आत्महत्या, ड्रग्स बढ़ते जा रहे है। इन जीवन पतन के कारणों से बचने के लिए यथा संभव कुनिमित्त से दूर रहना ही उचित है। हर व्यक्ति अगर अपनी मर्यादा का पालन करें तो बहुत सारे दोषों से मुक्ति पाया जा सकता है।

परिवार में एकता, प्रेम, शांति और प्रसन्नता चाहिए तो मर्यादा का पालन या सबको अनुसरण करना आवश्यक है।

मर्यादा तोड़ने से परिवार में अशांति फैलती है। सीता के मर्यादा (लक्ष्मण रेखा) तोड़ने के कारण ही दुष्ट रावण उन्हें लंका ले जा पाये।

मर्यादा तोड़ते ही जीवन में अनेक समस्या आ जाती है।

धर्म चुस्तता — संसार में धर्म दो प्रकार के होते है।

(१) गुणात्मक धर्म (२) क्रियात्मक धर्म

व्यक्ति को अधर्म से बचाने की महत्त्वपूर्ण भूमिका है – ***मन को सब समय कुछ न कुछ कार्य में व्यस्त रखना।***

कहा भी गया है कि–***खाली मन शैतान का घर,।*** मन को अगर कार्यशील न रखा जाय तो वह अवश्य अपने स्वभाव के अनुरूप शैतानी करेगा। धर्म क्रिया करने से मुख्य दो लाभ होते है। पहले मन बेकार बैठकर गलत कार्य की ओर आकर्षित नहीं होता हैं, दूसरा बारम्बार धार्मिक क्रिया करने से उन धार्मिक तत्त्व के साथ मानसिकरूप से हमारा सम्बन्ध सक्रिय हो जाता है। परिणाम स्वरूप इस जीवन में परमशांति की अनुभूति होती है और भवान्तर में हम सहजभाव से इस सत्क्रिया की ओर आकर्षित होते रहते है। जो व्यक्ति असत्क्रिया के संग में रहते है वे चाहते हुए भी धर्मक्रिया में अपनामन सहीरूप में लगा नहीं पाते है। हम जबतक धार्मिक क्रिया में लगे रहते है, तब तक तो यथासंभव पापक्रिया से बच ही जाते है। देवगुरु के सानिध्य में जब तक होते है तब तक अहंकार निष्क्रिय रहता है। जैसे- - पशुपालन से करुणा, गरीब की सेवा से दया, सहकुटुम्ब से–सहिष्णुता, माता-पिता को प्रणाम से नम्रता, मित्र बनाने से-दोष दृष्टि नष्ट आदि गुण उपलब्ध होता है। जो सुखमय जीवन जीने के लिए आगे चलकर महत्वपूर्ण सहायक होता है। वर्तमान बाह्यरूप में धर्म करते हुए व्यक्ति के जीवन में विपरीत परिणाम भी देखने को मिलते हैं। जड़ क्रिया करने वाले यथा कथित धार्मिक व्यक्ति के जीवन में विकास के विपरीत पतन होता है। वे स्वयं को धर्म-अध्यात्म का वास्तविक ज्ञान कुछ प्राप्त नहीं कर पाते, पर समाज के अन्य लोगों को धार्मिक क्षेत्र से दूर कर देते है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में क्रोध, अभिमान, असहिष्णुता, कपट कंजूसपन, दुराचार, अन्याय, अनैतिक जीवन आदि दुर्गुण का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। कोई

अगर अंगूर का दारु बनाकर सेवन करे तो, यह अंगूर का दोष नही, सेवन करने वाले का दोष है। आज हमारी सामान्य धारणा है कि धर्म करने वाले अन्दर से पापी होते है पर यह बात एकदम गलत है, कुछ धर्म विरोधी व्यक्ति धर्म की निन्दा करने के लिए ऐसा प्रचार करते हैं। वे धर्म विरोधी लोग धर्म का विरोध करने के लिए कुछ कल्पित सूत्र बना लिये है। जैसे-धर्म एक नशा है, धर्म आलस्यता को बढ़ाता है, धर्म बेकारी का अड्डा है आदि। पर वास्तविकता में धर्म के गुण व्यक्ति को मानव बनाते हैं। धर्म के नाम पर जो अन्याय करते है वे कभी भी वास्तविक में धर्मी होते ही नहीं है।

आप निरीक्षण करेगें तो पायेंगे कि जिसके घर पर सामाजिक व पारिवारिक धर्म का पालन होता है, वहाँ प्रेम, परस्पर सहयोग, आदि का प्रभाव अधिक पायेगें। पर जहाँ अधर्मी परिवार होता है वहाँ प्रेम, परस्पर सहयोग आदि गुण लुप्त हो जाते है। धर्मी परिवार में इसके विपरीत स्थिति होती है। इनमें सुबह उठकर माता-पिता को प्रणाम, कोई भी कार्य में बड़े का आदेश-निर्देश या अनुमति लेना,। सुख-दुःख में सहकार करना, आदि देखने को मिलता है, पर धर्महीन धनी या निर्धन परिवार एक साथ में रहते हुए भी दिनों तक परस्पर बातचीत न होना, अनुशासन-हीनता, स्वच्छन्दता, उपेक्षा, वृद्धो का अपमान आदि अधिक पाया जाता है। ऐसे परिवार में वृद्धजन मात्र मरने के नाम पर जीते है। ऐसी अवस्था में वृद्धों की स्थिति ऐसी हो जाती है कि वह न किसी को कह सकते है और न ही सह सकते है। वे उन सम्पन्न पुत्र-परिवार के भारभूत हो जाते है। सम्मान तो दूर की बात समय पर भोजन मिलना भी समस्या हो जाती है। उनसे भिखारी जैसा व्यवहार किया जाता है। कभी-कभी तो पुत्र परिवार धनी होने पर भी उन वृद्धो को भीख मांगनी पड़ती है। ऐसी स्थिति तक पहुँचने के लिए वृद्धो का भी कुछ हद तक हाथ होता है। जब उनकी चलती है उस समय वे संतानों को संस्कार देने में दुर्लक्ष्य रखते है। विधर्मी परिवार में विवाह सम्बन्ध के कारण भी कभी-कभी ऐसी स्थिति होती है।

पतिगृह में आनेवाली स्त्री अगर कुशल हो तो अपनी कुशलता से परिवार को बदल देती है।

आज का सामाजिक, वैवाहिक कार्यक्रम भी धर्म और मर्यादा को छोड़कर भौतिकवादी और असंस्कृतिक रूप में मनाया जाता है। विवाह

समारोह में अभक्ष्य भोजन, धन का प्रदर्शन, दहेज प्रजा आदि समाज के लिए कलंक है। इससे समाज विषम बनता जाता है। एक धनी बाप अपनी लड़की को अच्छे और धनी परिवार में विवाह देने के लोभ में एक अयोग्य लड़के को अधिक दहेज देकर, एक गरीब पिता को अपनी सम्पत्ति बेचकर भी दहेज देने के लिए मजबूर करता है। धनी व्यक्ति अपने संतान की शादी में खान-पान में अभक्ष्य आडम्बर प्रदर्शन करके, गरीब प्रतिवेशी को अपमानित करते है या उन्हें उसका अनुकरण करने के लिये मजबूर करते है। दूसरी बात दहेज के साथ ससुराल में जाने वाली लड़की कभी भी अनुशासन का पालन नहीं करती है। इसी कारण से विवाह विच्छेद का कारण अधिक बनता है, या फिर परिवार से पति-पत्नी अलग हो जाते है।

इन समाज विरोधी प्रवृत्तियों पर आज क्रान्ति की आवश्यकता है। परिवर्तन के लिए क्रान्ति अनिवार्य है। क्रान्ति के बिना परिवर्तन संभव भी नहीं होता है।

माता अपनी संतान के हित के लिए बच्चे की इच्छा न होते हुए भी बालघुटी पिलाती है।

आज व्यक्ति अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए ***भविष्य निधि, जीवन बीमा*** करता है, पर वास्तविक जीवन सुरक्षा से तो दूर ही रहते है। क्योंकि वृद्धावस्था धन से नहीं प्रसन्नता से सुखी बनती है।

संभव हो तो एक सुखी परिवार बनाने के लिए निम्नोक्त बातों का पालन करें।

(१) घर में एक छोटा मंदिर बनावे। घर के सभी सदस्य पूजा दर्शन करें।

(२) बच्चों को धर्म की शिक्षा देवे, धर्म क्रिया करने के लिए उत्साहित करे।

(३) एक घण्टा एक जगह किसी भी समय समस्त परिवार एक साथ बैठकर सुख-दुःख, धर्म-कर्म आदि अपनी अनुभव की बाते करें।

(४) समाज की विविध घटना की जानकारी सभी सदस्य को देवे। आज की घटी हुइ घटना अच्छी या बुरी हैं तथा उनके परिणामों की जानकारी सभी को देवें।

(५) रात्रि को सभी को जल्दी सोने की आदत डालनी चाहिये।

(६) परिवार में सुन्दर कार्य करने वाले सदस्य को, धन्यवाद, उपहार सभी के बीच देवे। जिससे अन्य को भी इसे प्रेरणा मिलेगी।

(७) तीर्थ आदि दर्शन, या बाहर गांव गया हो तो घर लौटते समय कुछ न कुछ धार्मिक वस्तु अवश्य लावे, जो सभी सदस्यों के लिए हो।

(८) परिवार के हर व्यक्ति को संकल्प करना चाहिए, अन्य भौतिक सामग्री न मिले तो कोई बात नहीं पर धर्महीन जीवन तो कभी भी नहीं जीयेगें।

(९) आपत्ति में सभी साथ रहेगें।

(१०) परिस्थितिवश धर्म का आचरण न कर सके तो आगे करने की भावना रखें, पर अधर्म का आचरण तो घर में प्रवेश करने नहीं देवें।

इस प्रकार उपरोक्त दस नियम का पालन करने वाला परिवार संसार को स्वर्ग तुल्य बना देता है।

धर्मक्षेत्र व धर्मक्रिया में दिखावा न लावे। संसारी जीवन में अनेक समस्यायें आती रहती है, परिस्थितिवश प्रत्येक व्यक्ति के लिये पूर्णरूप से धर्माचरण करना शायद संभव न भी हो तो कोई बात नहीं, पर हमें धर्म क्षेत्र व धार्मिक अनुष्ठानों में उस कमजोरी को नहीं लाना चाहिए।

मौज-मजा, मनोरंजन बाजार होटल तक ही सीमित रखे, तीर्थस्थान तक न लेजावे। तीर्थयात्रा को पिकनिक न बनाये।

धर्मानुष्ठान में अभक्ष्य भोजन व असंस्कृत नृत्य न करें। समारोह में स्त्री पुरुष एक स्थान पर नृत्य न करें। तीर्थों को इतना भौतिक साधन सम्पन्न न बनावे कि वहाँ मनोरंजन के लिए अधार्मिक प्रजा भी पहुंच जाये। तीर्थों को तो ऐसा पवित्र बना रखे कि यहाँ पर अधार्मिक की भावना भी धर्म के साथ जुड़ सके।

तीर्थ में जहाँ आत्मा पवित्र बनती वहाँ आज यह स्थिति हो गई है कि हमारे तीर्थ ही हमारे द्वारा अपवित्र बन रहा है।

महात्मा गाँधी हिन्द दैनिक 'स्वराज', में एक स्थान पर लिखे है कि रेलवे की व्यवस्था होने से अयोग्य व्यक्ति भी तीर्थस्थान में पहुँचकर तीर्थ को अपवित्र बना रहा है।

आप अभक्ष्य का त्याग हमेशा नहीं कर सके तो तीर्थस्थान पर कभी भी भक्षण न करें। आप तीर्थ की सेवा नहीं कर सकते है तो करने वाले को न रोके तथा तीर्थ को क्षति न पहुँचावे।

धर्मतीर्थ पवित्र शुद्ध नहीं कर सकते है। संतो का गुण ग्रहण न कर सके तो दोष तो न देखे।

आज समाज में अयोग्य धनी व्यक्ति को समाज का नायक, प्रधान मंत्री बना दिया जाता है। उन अयोग्य व्यक्ति में धर्म का ज्ञान नहीं होने के कारण धर्म संस्थाएँ व्यवस्था के नीति-नियमों को ताक में रखकर अपनी इच्छानुसार आचरण करके समाज को गलत रास्ते में ले जाते है। वे समाज के यथाकथित व्यवस्थापक साधु समाज पर भी अपना आदेश चलाते है। साधु को अपने से नीचे मानते है जो समाज के लिए अभिशाप है।

कोई न्यायाधीश अगर किसी व्यक्ति के पेट का आप्रेशन करने लगे तो क्या हालत होगी। इसी प्रकार अनाधिकृत कार्य करने का प्रयत्न करने से समाज में संघर्ष होता है।

मात्र गृहस्थ ही नहीं कभी-कभी साधु भी अर्थ व्यवस्था में अपना हस्तक्षेप करके साधु समाज को बदनाम करता है।

यह परिस्थिति कभी-कभी अनुभवी धर्मी व्यक्ति के निष्क्रियता के कारण भी उत्पन्न होती है।

अच्छे विचार वाले व्यक्ति को आज धर्मक्षेत्र में हस्क्षेप करने की आवश्यकता है। वास्तविक समाज इसको समझने का प्रयत्न करें।

धर्मक्षेत्र में जमानाकारी का प्रदूषण फैलाना घोर अन्याय है।

आज समाज की प्राचीन संस्कृति को नष्ट करने के लिए दो प्रकार का आक्रमण जारी है। प्रथम भारतीय प्राचीन संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कार का प्रसारण दूसरा धर्म के नाम पर परस्पर अन्तर्द्वन्द गृहयुक्त। ये दोनों कारण समाज के मूल स्तम्भ को उखाड़ने में समर्थ है।

पाश्चात्य साधन विकास के नाम पर अत्यन्त भोग साधन, नास्तिक, स्वच्छन्दी, बनाने का कार्य अनेक प्रकार की सार्वजनिक संस्थाएँ सेवा के

नाम पर कर रही है। नई पीढ़ी संस्कार के नाम पर सिनेमा, वी.डी.ओ., डिस्को, क्लब, अंग्रेजी शिक्षा आदि द्वारा स्वयं को वास्तविक धर्म से दूर भगा रही है। त्यागी वर्ग भी इस ओर धीरे-धीरे आकर्षित हो रहे है।

आज के समाज में धार्मिक संस्कार विशेष न होने के कारण विकास के नाम पर संघर्ष चल रहे है। व्यक्ति स्वयं का महत्त्व बढ़ाने के लिए नई-नई संस्था खोलकर समाज में गृहयुद्ध प्रारंभ कर रहे है। एक संघर्ष समाप्त हुआ न हुआ, तब तक अन्य दस नये तैयार हो जाते है। समस्या को मिटाने के नाम पर समस्या का क्षेत्रफल बढ़ता ही जा रहा है। प्राचीन काल में अन्य धर्म संप्रदाय के साथ संघर्ष विवरण मिलता है, पर आज तो सभी धर्म समुदाय परस्पर ही मोर्चा लिये बैठे है। आज हर धार्मिक संस्था को राजनीतिक संस्था का रूप दिया जा रहा है। आज के समाज के कुछ ज्वलन्त प्रश्नो का निराकरण उच्चस्तरीय आचार्यों द्वारा होना चाहिए पर दुर्भाग्य से सामान्य वर्ग इसमें पड़कर अधिक दूषित बना रहे है।

.अहिंसा के प्रचार में हिंसा, सत्य के प्रचार में असत्य का सहारा लिया जा रहा है। हर व्यक्ति को कोई व्यक्ति या सम्प्रदाय के हित में नहीं पर सम्पूर्ण समाज के हित में कार्य करना चाहिए।

प्राचीन काल में समाज के हित में धर्मरक्षा के लिए बड़े-बड़े धर्माचार्य भी स्वयं का बलिदान दे चुके है।

इस विषय में एक प्राचीन घटना—एक राजा ने अपने शत्रुराजा की हत्या के लिए बड़े पुरस्कार की घोषणा की। एक व्यक्ति ने इस कार्य को करने के लिए स्वीकार किया। बहुत उपाय किये पर, कोई सफलता नहीं मिली। राजा जैन धर्मानुयायी थे। जैनमुनि उससे मिल सकते थे। उक्त व्यक्ति गुप्तरूप में शस्त्र रखकर जैन मुनि बन गया। १०/१२ वर्ष बाह्य रूप में साधु जीवन पालन करते हुए राजा की हत्या का अवसर ढूढ़ता रहा। गुरु का कृपा पात्र बनने के लिए इतनी सेवा और विनय की कि कथित मुनि विनयरत्न के नाम से पहचाने जाने लगे। छायावत आचार्य महाराज के साथ ही रहने लगे। एक दिन राजा को पोषधव्रत करवाने के लिए आचार्य श्री विनयरत्न को लेकर राजभवन में गये। रात्रि को मौका पाकर अपने पास में १२ वर्ष से रखे अस्त्र से राजा की हत्या करके मुनि वहां से भाग गये।

आचार्य श्री को राजा की हत्या का पता लगते ही वे क्षण मात्र में सभी बातें समझ गये। उनको यह बात भी समझ में आ गई कि सुबह होते ही सारे राज्य में एक जैन मुनि द्वारा राजा की हत्या की बात फैल जायेगी। जिससे जैन धर्म की निन्दा होगी। जिस अस्त्र से राजा की हत्या हुई थी उसी से आचार्य श्री स्वयं ही आत्महत्या करके श्री संघ को निन्दा से बचाये।

आज उन जयचन्द्र को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है, जो समाज के अन्दर घुसकर समाज के सिद्धान्त की हत्याकर रहे हैं। आज घर के चिराग से ही घरों में आग लगाया जा रहा है। आज हम बाहर के कुछ स्वार्थी व्यक्ति के निर्देश पर समाज में संघर्ष कर रहे है। भाई-भाई का शत्रु बन रहा है। हमें परस्पर लड़ाकर वे स्वार्थी व्यक्ति अपना कार्य सिद्ध करना चाहते है। और हम सामान्य स्वार्थ के लिए समाज के घर-घर में ज्वालामुखी का निर्माण कर रहे है। याद रखे यही ज्वालामुखी कभी विस्फोटक रूप धारण करके समाज का सत्यानाश कर सकता है।

निन्दा का त्याग करें— संघर्ष का मुख्य कारण परनिन्दा है। अहंकार का प्रतिबिम्ब निन्दा है। पाप ढकने का असफल प्रयत्न और असफलता का प्रतीक भी निन्दा ही है। निन्दा का अर्थ है अनावश्यक, अनर्गल अयोग्य स्थान पर या सम्बन्धित व्यक्ति की अनुपस्थिति में उसकी चर्चा, आलोचना करना। इस प्रकार की प्रवृत्ति परस्पर संघर्ष का कारण बनती है। इस प्रकार किसी व्यक्ति की चर्चा करके, बातों को आप गुप्त रखने का कितना ही प्रयत्न क्यों न करें किसी रूप में कही न कहीं बात फैल ही जाती है। इसीलिए लौकिक नीति सूत्र का एक वाक्य है—***दीवार के भी कान होते है।*** बाते फैलने से परस्पर आक्षेप-प्रत्याक्षेप प्रारंभ हो जाता है कभी-कभी इसका रूप इतना बड़ा हो जाता है कि वह हत्या आत्महत्या का भी कारण बन जाता है।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

चन्द्रयशा–केवली

(१०) नियमित स्थान में स्थिति करना यह व्यवहार से दसवां व्रत कहलाता है। परन्तु ज्ञान के द्वारा छह द्रव्यों का स्वरूप समझकर, पाँच द्रव्यों में त्याग बुद्धि रख ज्ञान से आत्मा का ध्यान करना इसे निश्चय नय से दसवां-देशावकाशिक व्रत कहते हैं।

(११) रात दिन के आरंभ समारंभ या पापकारी व्यापार का परित्याग करके ज्ञान, ध्यान में प्रवृत्त होना व्यवहार से ग्यारहवाँ व्रत कहलाता है। परन्तु ज्ञान-दयानादि के द्वारा आत्मीय गुणों का पोषण करना इसे निश्चय नय से ग्यारहवाँ पौषधोपवास व्रत कहते हैं।

(१२) पूर्वोक्त नियमों को धारण करने वाले गृहस्थ के लिये पौषध पारकर या सदैव साधु मुनिराज को या किसी विशिष्ट गुणवान् श्रावक को अतिथिसंविभाग करके भोजन कराना, इसे व्यवहार से अतिथि संविभाग व्रत कहते हैं। परन्तु अपनी आत्मा को तथा अन्य को ज्ञानदान करना, पठन पाठन, श्रवण, श्रावण, वगैरह को निश्चय से बारहवाँ अतिथि संविभाग नामकव्रत कहते है।

पूर्वोक्त निश्चय और व्यवहार भेदोंसहित ये बारह प्रकार के नियम गृहस्थ श्रावकं को मुक्ति मंदिर की तरफ ले जाते हैं। केवल व्यवहार से ही धारण किये ये व्रत आत्मा को देव लोकादिका सुख प्राप्त कराते हैं।

महानुभावों! आत्मीय सुख प्राप्तिका उद्देश्य किये बिना संसारिक सुख की लालसा में अमूल्य जीवन की कदर्थना करना मूर्खता है, क्या यह कीमती जीवन विषय वासनाओं के प्रवाह में बहा देने के लिए प्राप्त हुआ है? या उन क्षणिक सुख के साधनों को एकत्रित करने के लिए ही दुर्लभ मानव जन्म पाया है जो बादल की छाया के समान कुछ देर आकर नष्ट हो जाता है? संसार परिवर्तनशील है, उसमें मनुष्य अपनी जीवन नौका को वहन

करता है। यदि वह पतवार को छोड़ हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाय तो नौका काल के प्रवाह में बह जाय। परिवर्तनशील संसार में रहनेवाले हरएक समझदार मनुष्य को अपने बहुमूल्य मानव जीवन का लक्ष्य कायम कर सदैव उसकी ओर ध्यान रखना चाहिये। बहुत से मनुष्य आत्मीय सुखकी ओर दुर्लक्ष्य कर शारीरिक सुख को अधिक महत्व देते हैं। वे सवार की अपेक्षा घोड़े को ही कीमती समझते हैं।

राजन्! परम-सुख प्राप्त करने का मुख्य साधन शरीर अस्थिर है। सुखकी भ्रांति करानेवाली लक्ष्मी बिजली के चमत्कार की तरह चंचल है। संयोग वियोग वाले हैं। प्राणी-मात्र के सिर पर मृत्यु का नाच हो रहा है, न जाने किस समय और किस पर उसकी तान टूट जाय। संसार के तमाम सुख स्वप्न के सरीखे हैं। संकट के समय धर्म के सिवा कोई भी सहाय नहीं कर सकता। देव-देवेन्द्र, राजा रंक, स्त्री-पुरुष और बाल वृद्ध आदि सबको एक समय मृत्यु का ग्रास बनना है। इसलिए हे भव्यात्माओं! आलस्यकी घोर निद्रा को त्यागो। सावधान होकर परम शान्ति मार्ग में प्रयत्न करो। निरन्तर सुख की इच्छावाले मनुष्य को कभी न कभी अवश्य ही इस मार्ग का आश्रय लेना पड़ेगा। अमूल्य जीवन का एक भी क्षण निरर्थक न जाने दो। ये क्षण बड़े ही कीमती हैं। विपुल संपत्ति खर्चने पर भी गया क्षण हाथ नहीं आता, और पुण्योदय से प्राप्त हुई, यह सर्व, सामग्री बार बार नहीं मिलती।

पूर्वभव वृत्तान्त–

केवली भगवान के धर्मोपदेश को सुनकर अनेक मनुष्यों को बोध प्राप्त हुआ। महात्मा के वचनों से राजकुटुम्ब को बड़ी शान्ति प्राप्त हुई। ज्ञान पिपासु और धर्म जिज्ञासु मनुष्यों के आनन्द का पार न रहा। सारी सभा में शान्ति का साम्राज्य छा गया। समय पाकर राजा सूरपाल हाथ जोड़ कर बोला ज्ञान दिवाकर भगवन्! मेरे मन में एक आश्चर्य जनक शंका है, कृपाकर आप उत्तर देकर कृतार्थ करें। प्रभो! समुद्र में पड़ी मलयासुन्दरी को उस मगरमच्छ ने कुछ भी कष्ट न पहुँचा कर इसे सुख पूर्वक समुद्र तट पर क्यों कर ला उतारा? उसमें ऐसा कौन सा ज्ञान था जिससे वह इसे समुद्र किनारे पर उतार कर बारंबार प्रेम भरी नजर से इसको देखता हुआ वापिस चला गया।

केवली ने फरमाया– राजन्! मलयासुन्दरी की धाय माता वेगवती अन्तसमय आर्त्तध्यान से मरकर इसी समुद्र में मगरमच्छ के रूप में पैदा हुई है। जिस समय मलयासुन्दरी भारंड पक्षी के पंजों से निकल कर समुद्र में पड़ी उस समय दैव वशात् वह मगरमच्छ उसी जगह पानी पर तैरता था। पुण्य के योग से मलया उसकी पीठ पर आ पड़ी। मलयासुन्दरी उस वक्त अपना अन्तिम समय समझ कर परमेष्ठी मंत्र का उच्चारण कर रही थी। उसके शब्द मगरमच्छ के कान में पड़ते ही उसने इस की ओर देखा। मलया को देख ताजे संस्कार होने से उसे अपने पूर्व भव का जाती-स्मरण-ज्ञान हो गया। उस ज्ञान के कारण उसने मलयासुन्दरी को पहचान लिया। मगरमच्छ विचारने लगा कि अहो! राज-महलों में रहनेवाली इस मेरी पुत्री पर अवश्य कोई भयंकर संकट पड़ा दिखता है। जिससे यह ऐसे अगाध समुद्र में आ पड़ी है। मैं ऐसी तिर्यंच की अधम स्थिति में इसे किस प्रकार सहायता करूँ? जलचर पशु की गति में पैदा होने के कारण मैं इस निराधार लड़की को अन्य किसी भी तरह की सहायता नहीं कर सकता तथापि इसे अपनी पीठ पर बैठा कर किसी मनुष्य की बस्तीवाले स्थल प्रदेश तक तो पहुँचा ही सकता हूँ। उसके बाद यह किसी भी प्रकार से अपने सगे सम्बन्धियों से जा मिलेगी।

पूर्वोक्त विचारों से उस मगरमच्छने अगाध समुद्र से सुखपूर्वक मलयासुन्दरी को समुद्र तटपर ला छोड़ा। पुत्रीत्व–के स्नेह से गर्दन पीछे घुमाकर बार-बार उसे देखता हुआ वह मच्छ वापिस समुद्र में चला गया।

केवली–राजन्! जातिस्मरण ज्ञान होने के बाद वह वेगवती का जीव निरन्तर निर्दोष आहार करता है, और श्री परमेष्ठी महामंत्र का ध्यान स्मरण करता रहता है। वह अपने मगरमच्छ भवसम्बन्धी आयुष्य को पूर्ण कर पूर्वकृत कर्मों का पश्चात्ताप, महामंत्र नवकार का स्मरण, और शुभ–भाव की सहाय से देवगति को प्राप्त होगा। श्री चंद्रयशाकेवली के मुख से मलयासुन्दरी की धायमाता वेगवती का भवान्तर सुनकर राजा आदि तमाम मनुष्य आपस में बोलने लगे–***सचमुच ही उसने इस पशुभव में भी माता के जैसा ही प्रेम जताया है। ऐसे तिर्यचके भव में भी वह अपने कर्त्तव्य को नहीं भूली।***

सूरपाल-*भगवान्! इस मेरे पुत्र महाबल ने और पुत्र-वधू मलयासुन्दरी ने पूर्व जन्म में ऐसे क्या कर्म किये हैं कि जिनसे इन्हें ऐसे सुखसंपन्न कुल मे पैदा होकर भी घोर दुःखों का अनुभव करना पड़ा?*

केवली--*राजन्! आप सावधान होकर सुनें। मैं इनका पूर्वजन्म-वृत्तान्त सुनाता हूँ– पृथ्वीस्थानेपुर में पहले एक प्रियमित्र नामक जमींदार रहता था। वह बड़ा समृद्धिवान था। परन्तु उसके पुत्रादि सन्तति नहीं थी। प्रियमित्र के भद्रा, रुद्रा, और प्रियसुन्दरी नाम की तीन स्त्रियां थीं। रुद्रा और भद्रा दोनों सगी बहनें थीं। अत; उन दोनों में परस्पर अच्छा प्रेमभाव रहता था। किन्तु प्रियमित्र का उन दोनों पर प्रेम न था। उसका प्रियसुन्दरी पर ही पूर्ण प्रेम था। बस इसी कारण प्रियमित्र प्रियसुन्दरी के साथ रुद्रा एवं भद्रा का क्लेश रहता था। यह क्लेश उसके घर में निरन्तर होता था। प्रियमित्र का एक मदनप्रिय नामक मित्र था वह प्रियसुन्दरी को प्रेम की नजर से देखता था। सदैव आने जाने के विशेष परिचय से वह प्रियसुन्दरी पर आसक्त हो गया। हमेशा वह प्रियसुन्दरी के साथ बड़े प्रेम से वार्तालाप करता। एक दिन एकान्त में रही हुई प्रियसुन्दरी के रूप में मुग्ध होकर मदनप्रिय ने उसे अपनी विषय-वासना पूरी करने का अभिप्राय जनाया। प्रियसुन्दरी का हृदय सरल और पवित्र था। वह पतिपर पूर्ण प्रेम और भक्ति रखती थी, उसके पति का भी उस पर अनन्य प्रेम था। प्रियसुन्दरी ने मदनप्रिय के अभिप्राय को तिरस्कार के साथ ठुकरा दिया और कहा फिर से मेरे समक्ष आप ऐसा अभिप्राय प्रगट न करें, यह भी उसे साम्यभाव से समझा दिया परन्तु मदनप्रिय मदन के अधीन होने से अपने दुराग्रह से पीछे न हटा। वह जब कभी समय पाता तब प्रियसुन्दरी से वही बात छेड़ता। प्रियसुन्दरी उसे समझाने का प्रयत्न करती, परन्तु मदन की आतुरता में और भी वृद्धि होती रही।*

एक दिन प्रियसुन्दरी के सिवा घर में अन्य कोई न था। मदन ने आकर प्रियसुन्दरी से फिर वही प्रार्थना की तब वह उसे साम दामादि नीति के वचनों से समझा रही थी, कि दैव वशात् उसी समय बाहर से वहां पर प्रिय-मित्र आ पहुँचा। उसने एकान्त में छिप कर उनकी बातें सुन लीं।

क्रोधातुर होकर प्रियमित्र ने यह सारा वृत्तान्त मदनप्रिय के कुटुम्बियों से कहा। कुलीन होनेके कारण उन लोगों को बड़ा शर्मिन्दा होना पड़ा। उन्होंने मदन को बुला कर उसका बड़ा तिरस्कार किया, और कह दिया, कि यदि तू कुलीन है, और कुछ शरम रखता है, तो हमें मुँह न दिखाना। वह नगर छोड़ कर चला गया।

इस बात से प्रभु श्री चंद्रयशा केवली महाराज के मुखारविन्द से पूर्वोक्त बातें सुनकर सभा में बैठे कईएक वृद्ध मनुष्य बोल उठे ***गुरुदेव!*** आप बिलकुल सत्य फरमाते हैं। हम स्वयं पृथ्वी स्थानपुर के ही रहने वाले हैं। हम खुद इस बात को जानते हैं। यह घटना हमारे स्मरण में है। मदनप्रिय आजतक अपने घर नहीं आया, और प्रियमित्र का घर अभी तक उसके नाम से पहचाना जाता है। उस घर में आज भी उसके निकट सम्बन्धी रहते हैं। अहो! ज्ञान की कैसी महिमा है! ज्ञानी पुरुष ज्ञानबल से ही पूर्व में बीती हुई सर्व घटनाओं को जानते है।

राजा सूरपाल- शहर को छोड़े बाद मदनप्रिय की क्या दशा हुई भगवान्?

श्री चंद्रयशा केवली—मदनप्रिय घर से निकलकर अपने कृत्य के लिए पश्चाताप करता हुआ देशान्तर को चल दिया। चलते-चलते उसे दो दिन निराहार ही बीत गये, तीसरे दिन जब वह एक अटवी में जा रहा था, तब वहाँ पर उसे बहुतसी गायें चरती दिखाई दीं। क्षुधातुर मदन ने चरवाहे से दूध की प्रार्थना की। तीन दिन से भूखे मदन को देखकर चरवाहे को दया आ गई। उसके गोकुल में उस समय एक बिना दूही भैंस थी, उसने उस भैंस को दूह कर मदन को बहुत सा दूध दे दिया। मदन बोला—यह नजदीक में जो तालाब दीख पड़ता है वहाँ जाकर मुँह हाथ धोकर वहाँ ही मैं दूध पीऊँगा। चरवाहे ने खुशी से वहाँ पर दूध का घड़ा ले जाने की सम्मत्ति दी। मदन दूध के घड़े को लेकर तालाब के किनारे आया। शुभ भावना से वह सोचने लगा मुझे आज अन्नजल ग्रहण किये दो दिन हो गये, यदि इस समय कोई अतिथि महात्मा तपस्वी आदि उत्तम पात्र मिल जाय तो उसे इस दूध को बहरा कर-फिर पारणा करूं तो मेरा जन्म सफल हो जाय। मैंने अपने जीवन में कुछ भी सुकृत नहीं किया। इसी से मेरी यह दुर्दशा हुई है इस समय मेरे खाने पीने

तक के लिए भी कुछ साधन नहीं रहा। ऐसी विषम स्थिति में भी अगर कोई महात्मा दर्शन दें तो मैं उन्हें इस दूध को देकर कुछ सुकृत उपार्जन करूं।

जिस समय मदन इस प्रकार विचार कर रहा था ठीक उसी समय सद्भाग्य से वहाँ पर एक मासोपवासी महात्मा पधारे। वह तपस्वी मासोपवास के पारने के लिये नजदीक गाँव की तरफ जा रहे थे। तपस्वी साधु को देखकर मदन के विशुद्ध परिणामों में और भी वृद्धि हुई। वह हर्षित होकर विचारने लगा–अहो! मेरा सद्भाग्योदय है जिससे मनोरथ करते ही इन महापुरुष के दर्शन हो गये। मैं इन्हें दूध बहरा दूँ, यह निश्चिय कर उसने मुनि के रास्ते की तरफ जाकर भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर कहा– हे महात्मन्! कृपालु मुनिराज! यह निर्दोष दूध ग्रहण करके मेरा कल्याण करो। मदन के शुभ परिणामों को देखकर द्रव्य, क्षेत्र, कालभाव– से उस द्रव्य को विशुद्ध समझकर तपस्वी ने इच्छानुसार उसमें से कुछ दूध ग्रहण किया। मदन ने भी शुभ परिणाम से उस महातपस्वी को दूध का दान देकर विशेष पुण्य उपार्जन किया।

सचमुच ही ऐसी गरीब स्थिति में और दो दिन की सहन की हुई भूख प्यास में भी खाद्य या पेय पदार्थ प्राप्त करके अतिथि–महात्मा को दान देने की जो भावना पैदा होती है यही भावी शुभ दिनों की सूचना के लक्षण हैं। ऐसी परिस्थिति में योग्य पात्र को दिया हुआ थोड़ा सा भी दान महान् फलदायक होता है। भरेको कौन नहीं भरता? सुखी और धनाढ्यों का कौन सत्कार नहीं करता? परन्तु जो त्यागी संयमी साधु–पुरुष हैं–उन्हें दान देने में कितना महान लाभ होता है, इस बात को समझने वाले बहुत कम मनुष्य होते हैं।

मुनिराज अन्यत्र विहार कर गये। मदन भी उन तपस्वी–मुनिराज को नमस्कार कर वापिस उस तालावकी पाल पर आ गया, और मुनिदानसे अपने आपको कृतार्थ मानते हुए उसने शेष बचा हुआ दूध पी लिया।

जंगल में मनुष्यों के विशेष उपयोग में न आने का कारण इस जंगली तालाब के किनारे इंटों से या पत्थर से बंधे हुए नहीं थे। एवं मदन भी अनजान होने से उस तालाब की गहराई या उसके उतरने का सरल मार्ग न जानता था। वह उसके किनारे पर बैठकर नीचे झुककर तालाब से पानी पीने लगा। इतने में ही उसका पैर फिसल जाने से वह तुरन्त ही तालाब में

जा गिरा, तालाब के किनारों के पास ही अगाध जल था। मदन तैरना नहीं जानता था। अतः वह तालाब से बाहर न निकल सका। उसे निकालनेवाला भी उस जंगल में नजदीक में कोई नहीं था इसीलिये उस विचारे मदनको तालाब में ही अपने प्राण त्यागने पड़े।

शुभभावना पूर्वक मुनिदान के प्रभाव से मदन मृत्यु पाकर इसी सागर-तिलक शहर के राजा विजय के घर पुत्र रूप में पैदा हुआ। उसका नाम कंदर्प रक्खा गया। विजय राजा की मृत्यु के बाद कंदर्प ही इस शहर का राजा बना।

इधर प्रियमित्र भी सुन्दरीके साथ विलास करता हुआ आनन्द में अपने दिन बिता रहा था। परन्तु इस विषयानन्द में उसने अपनी दूसरी रूद्रा और भद्रा दोनों पत्नियों के साथ अनेक प्रकार की दुश्मनी पैदा कर ली। एकदिन प्रियमित्र सुन्दरी को साथ लेकर धनंजय यक्ष के दर्शन करने जा रहा था। रास्ते में चलते हुए वे एक बड़े वृक्ष के विस्तार से अलंकृत प्रदेश के पास आये, वहां पर उन दोनों ने अपने सन्मुख आते हुए एक मुनि को देखा। मुनि के दर्शन से प्रिय सुन्दरी के मन में अपशकुन की भावना पैदा हुई। वह सोचने लगी कि यात्रा के लिये जाते हुए हमें सबसे पहले यह नंगे सिरवाला मोड़ा ही मिला है इस अपशकुन से हमारी यात्रा सफल न होगी, बल्कि और भी कुछ उपद्रव होगा। इत्यादि बोलती हुई सुन्दरी ने अपनी गाड़ी और परिवार को आगे न बढ़ने देकर वहीं पर ठहरा लिया।

संसार की विचित्रता का पार नहीं है। जो महापुरुष विषय कषायादि महान् अपमंगलों से दूर हैं जिनके हृदय में से सांसारिक मलीन वासनायें निकल गई हैं जो सदैव ज्ञान-ध्यान और आत्मिक विचार में ही लीन रहते हैं जो संसार के विषय-लंपट मनुष्यों को हितोपदेश देकर दुष्कर्मजन्य पापों से रक्षण करते हैं जो हमेशा दूसरों का कल्याण करने की चिन्ता किया करते हैं। जिनके दर्शन मात्र से मनुष्यों के संकट दूर हो जाते हैं- ऐसे मंगलमय महात्मा-महापुरुषों को देखकर अपशकुन या संकट आने का विचार करना यह कितनी भयंकर अज्ञता है? शुभकार्य के लिये घर से निकले मनुष्यों को यदि सद्भाग्य से सन्मुख किसी महात्मा पुरुष का दर्शन हो जाय तो इससे बढ़कर और क्या

शुभ शकुन हो सकता है? यह बात याद रखनी चाहिए कि शकुन को देखकर जैसी मनुष्य की भावना होती है वैसा ही उसे फल मिलता है।

अपशकुन की बुद्धि से मार्ग चलते बन्द हो जाना ही सुन्दरी के लिये अच्छा न हुआ। वह अनेक प्रकार से उस महात्मा को उपसर्ग करने लगी। क्योंकि क्रोधाधीन स्त्री के लिए संसार में कोई भी कार्य अकर्तव्य नहीं होता।

मुनिने अपने ऊपर आये कष्ट को देखकर विचार किया कि मेरी परीक्षा का समय आ गया है। जिस प्रकार ताप ताडन द्वारा सच्चे सुवर्ण की परीक्षा होती है वैसे ही संकटों द्वारा उत्तम पुरुषों की कसौटी होती है। इन अज्ञानियों के किए हुए उपद्रव से अज्ञानता में पड़कर मुझे अपने स्वभाव या स्वरूप से विचलित न होना चाहिये। ऐसे ही समय पर अज्ञानी और ज्ञानवानों का भेद मालूम पड़ता है। यदि संकट के समय ज्ञानवान मनुष्य भी अज्ञानी प्राणियों के समान अपने रूप को भूलें तो फिर उन दोनों में कुछ भी भेद नहीं रहता। उपद्रव के समय समभाव रखने से प्राचीन कर्मों को भोग लेने के उपरान्त नवीन कर्मबन्धन भी नहीं होता। इसलिए मुझे अब अपने स्वभाव में रहना चाहिए। यह विचार कर मानसिक वृत्ति को निर्मल रखकर आत्मोपयोग में दत्तचित हो वह मुनिराज ध्यानस्थ–कायोत्सर्ग में खड़े रहे। मुनिको सन्मुख खड़ा देख सुन्दरी को और भी अधिक क्रोध भड़क उठा। वह उन्हें अहंकारी, पाखंड़ी कहकर निष्ठुर वचनों से उनकी कदर्थना करने लगी। वह अपने सुन्दर नामक नौकर से बोली–सुन्दर! यह जो पास में इंटो का पजावा पक रहा है, जा वहाँ से आग ले आ मैं इस पाखंडी वेषधारी को दाग दूंगी, जिससे इसका किया हुआ अपशकुन दूर हो जायेगा और इसका अहंकार भी दूर हो जायेगा।

सुन्दर बोला–स्वामिनी! मेरे पैरों में जूते नहीं हैं, वहाँ जाने में रास्ते में कांटे बहुत हैं व्यर्थ ही कांटों में कौन जाय, और साधु को दाग देने से अपने को क्या फायदा होगा? इन निकम्मे विचारों को छोड़ो गाड़ी हांकने दो अभी दूर जाना है।

अपनी स्त्री के हुक्म का अनादर हुआ देख पत्नी के आदेश में सम्मत्ति देनेवाला प्रियमित्र दूसरे नौकर की तरफ देखकर क्रोध के आवेश में बोला–

अरे! इस सुन्दर के दोनों पैर इस बड़े वृक्ष की शाखा से बांध दो, जिससे इसके पैर में जमीन पर पड़े हुए कांटे न लगने पावें। अपने विचारों में पति की सहानुभूति मिलजाने पर प्रियसुन्दरी को और भी जोश आ गया। एवं वह गाड़ी से नीचे उतरकर बोलने लगी अरे पाखंडी! तेरे मुंडितरूप में दर्शन से हमारी पतिपत्नी रूप इस जोड़ी में कदापि वियोग न हो। तेरा अपशकुन तुझे ही हानिकारक हो। तेरे बन्धुवर्ग से तेरा सदैव वियोग हो। तू सचमुच राक्षस जैसा है, इसी कारण तुझे देखकर हमें डर लगता है। इस प्रकार अनेक विध कटु वचनों से मुनिका तिरस्कार करती हुई निष्ठुर हृदयवाली सुन्दरी ने मानों अपने ही मुख पर प्रहार करती हो इस तरह मुनिपर तीनबार पत्थर से प्रहार किया। इतना करने पर भी उसे संतोष न हुआ। उसने मुनि के पास आकर उसके हाथ में से रजोहरण (जैनमुनि का चिन्ह) छीन लिया और उसे अपनी गाड़ी में रख दिया। ऐसा करने पर उसने कुछ संतोष माना, बाद वह नौकरों से बोली ***चलो अब हमारा अपशकुन दूर हो गया। अब हमें कुछ भी अनिष्ट न होगा। चलो अब निर्भय होकर आगे चलो धनंजय यक्षकी पूजा करेंगे।*** सुन्दरी की आज्ञा पाकर सब आगे चल पड़े और कुछ देर बाद धनंजय यक्ष के मंदिर समीप आ पहुँचे।

यक्षकी पूजाकर यात्रा सफल मनाकर परिवार सहित प्रियमित्र और प्रियसुन्दरी एक स्वच्छंस्थान में भोजन करने के लिये बैठे इस समय प्रियसुन्दरी को प्रसन्न देख जैन धर्म में विशेष प्रेम रखनेवाली एक दासी ने अपने मालिक और मालकिन से नम्रता से कहा-आप लोगों ने उस क्षमाशील महाव्रत धारक और त्यागकी मूर्ति महा-मुनि को कष्ट देकर, तिरस्कार और कदर्थना करके महान पाप उपार्जन किया है। संसार से विरक्त हुए महात्माओं की हँसी और मजाक करने वाला इस जन्म में और अगले जन्म में अनेक दुःखों अनुभव करता है। जिसमें आप लोगों ने तो उनका बहुत सा तिरस्कार कर, उन्हें पत्थरों से मार कर, अनेक तरह क्रोध पूर्ण वचनों से कदर्थनाकर उनका रजोहरण भी छीन लिया है। इससे आप लोगों ने बड़ा भयंकर दुःख भोगने का कर्म उपार्जन कर लिया है। आपको शान्त-चित्त से इस पर स्वयं विचार करना चाहिये। ऐसे महात्मा अनेक प्राणियों का उद्धार करने वाले होने के कारण संसार में जीवों के आधारभूत होते हैं। संसार विषयों में तपे हुए

मनुष्य समाज के लिए ऐसे महापुरुषों का समागम मेघ के समान शान्ति देने वाला होता है। ऐसे ज्ञानीसाधु रात दिन अपने और पराये जीवों के हित चिन्तन में ही लीन रहते हैं, इसलिए वैराग्य और मंगल-मूर्ति महात्माओं को दुःख देना अपने सुख को नाश करने के समान है।

दासी के इन उपदेश-बचनों को सुनकर उन दोनों के हृदय में पश्चात्ताप हो उठा और वे अपने किये हुए दुष्कर्मजन्य पाप के भय से थर-थर काँपने लगे। दुर्गति के डरसे वे दीन मन होकर अत्यन्त पश्चाताप करते हुए अपने कृत्यों की निन्दा करने लगे। दुर्गति से बचानेवाला उपदेश देनेवाली उस दासी की बुद्धि की उन्होंने बहुत ही प्रशंसा की। उसे अनेक धन्यवाद दिये और उन्होंने जैनधर्म को समझने की जिज्ञासा प्रकट की।

मुनिका रजोहरण वापिस देने और अपने दुष्कृत्यों की क्षमा याचना करने के आशय से वे शीघ्र ही उस यक्षमन्दिर से वापस लौटे। वे मुनि भी अभी तक ध्यान मुद्रा में उसी जगह खड़े थे। उनका रजोहरण छिन जानेपर उनसे यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक मेरा रजोहरण मुझे वापस न मिले तबतक मैं अन्यत्र न जाकर यहां ही खड़ा रहूंगा।

अब प्रियमित्र और प्रियसुन्दरी मुनि के पास आ पहुंचे सुन्दरी ने मुनि का रजोहरण वापस दे दिया। अपने अज्ञान पूर्ण कृत्यों के लिये पश्चाताप करते हुए उनकी आँखें भर आई वे क्षमायाचना करते हुए मुनिजी के चरणों में लेट गये और दीनता पूर्वक प्रार्थना करने लगे कि हे कृपा के समुद्र अज्ञानता से परतंत्र होकर हमने आप जैसे जगत् पूज्य महामुनि की कदर्थना विराधना की। इस विराधना के पाप से कुँभार के चाकपर चढ़े हुये मिट्टी के पिण्ड के समान हमें संसार चक्र में परिभ्रमण करना पड़ेगा। अनेक दुर्गतियों में घोर दुःख सहने पर भी हमारा इस पाप कर्म से छुटकारा न होगा। हे दया के सिन्धो! क्षमासागर! भगवन्! प्रसन्न होकर हम अज्ञान पामर प्राणियों पर क्षमा करो। हे दीनबन्धो! करुणा कर हम अविनीतात्माओं का यह अपराध माफ करो, और इस पाप से सर्वथा मुक्त होने का हमें कोई उपाय फरमाओ।

उनके करुणाजनक और पश्चाताप-पूर्ण बचनों को सुनकर मुनिने अपना कायोत्सर्ग पूर्णकर कहा-हे महानुभावों! मेरे हृदय में क्रोध नहीं है। अज्ञानता से कर्माधीन, परमार्थ से पराङ्मुख और अपने ही किये कर्म से

अनेक प्रकार की बिंबडना को प्राप्त हुए संसार के पामर प्राणियों पर तत्व को जानने वाले मुनि कदापि क्रोध नहीं किया करते। वैसे लब्धिगुण धारी मुनि महात्मा किसी कारण से क्रोध करें भी तो वे जगत को भस्मीभूत कर सकते हैं।

मेरा हृदय संसार के समस्त प्राणियों के लिये करुणा रस पूर्ण है, इसी कारण में किसी की प्रेरणा के बिना ही सर्वजीवों पर क्षमाभाव रखता हूँ। तथापि महानुभावों! मुझे तुम्हें इतना जरूर कहना पड़ता है—कि इस प्रकार की मूँढ़ता या अज्ञानता को त्याग कर विवेकी बनना चाहिए और अज्ञानता को दूर करने वाले और आत्मस्वरूप का ज्ञान करानेवाले तुम्हें जैन धर्म को स्वीकार करना चाहिए। आत्मा की नित्यता और कर्मों की विचित्रता समझनी चाहिये। समस्त प्राणी सुख की इच्छा रखते हैं, तुम्हें खुदको सुख प्रिय लगता है और दुःख भयानक जान पड़ता है तब दूसरे प्राणियों को दुःख क्यों देना चाहिए? सुख को चाहने वाले मनुष्यों को चाहिये कि वह दूसरों को भी सुख ही दें। हर एक मनुष्य को अपने किये हुये शुभाशुभ कर्मों का फल सुख या दुःख रूप में भोगना ही पड़ता है।

करुणा से प्रेरित हो अपकारी पर भी उपकार करने वाले उन त्याग-मूर्ति मुनिराज ने उन्हें अनेक प्रकार से हित शिक्षा दी। संक्षेप में द्वादश व्रतरूप गृहस्थ-धर्म समझाया। उन दोनों ने मुनि का दिया हुआ हितोपदेश प्रेमपूर्वक सुना और पाप कर्मों से मुक्त होने के लिये एवं भविष्य में सुख प्राप्ति की इच्छा से उन्होंने सम्यक्त्व पूर्वक गृहस्थ धर्म अंगीकार किया। अब जैनधर्म को स्वीकार कर वैराग्य रंग से सुरंगित हो मुनि को आहारादि निमित्त प्रार्थना कर वे अपने घर आए। मुनि को भी कुछ देर बाद समय होने पर भिक्षा के लिए नगर में गये। अपने योग्य निर्दोष भिक्षा की गवेषणा करते हुए मुनिराज अकस्मात् स्वभाव से ही प्रियमित्र के घर आ पहुँचे। मुनि का दर्शन करते ही अपने जन्म को सफल मानते हुए दम्पत्ति ने बड़े हर्ष पूर्वक मुनिजी को विशुद्ध आहार पानी का, लाभ दिया आहार लेकर मुनिजी यन्यत्र विहार कर गये।

परस्पर प्रेम धारण करते हुए प्रियसुन्दरी और प्रिय मित्र सम्यक् श्रद्धान पूर्वक मनुष्य-जन्म के सारभूत गृहस्थ-धर्म की आराधना करने लगे। आपस में स्नेह रखती हुई रुद्रा और भद्रा भी एक जुदे घर में रहकर अपने माने हुए धर्मानुसार यथाशक्ति दानादि से पुण्य उपार्जन करने लगीं।

परस्पर प्रेम होने पर भी एक दिन ऐसा कारण बन गया जिससे उन दोनों में भी खूब क्लेश हुआ। परन्तु कुछ देर बाद शान्त होने पर उन्हें बड़ा पश्चात्ताप हुआ, हमारा जन्म बिलकुल निरर्थक है। इस घर में सदैव क्लेश रहता है। पति की ओर से तो हमें सर्वथा सुख नहीं, क्योंकि उसे प्रियसुन्दरी ने ही अपने आधीन कर रक्खा है। वे दोनों पति-पत्नी हमारे सामने देखते तक नहीं हैं, प्रेम से बोलने की तो बात ही क्या? हम दोनों में प्रेम है सही पर कभी-कभी हममें भी क्लेश हो ही जाता है। इस तरह क्लेशमय जीवन बीताने की अपेक्षा से मरजाना बेहतर है। हमसे जितना बन सका उतना दान पुण्य कर लिया है, अब देह का त्याग करना ठीक है। इस प्रकार प्राण-त्याग का निश्चय कर एक-मनवाली होकर किसी को मालूम न हो इस तरह दोनों ने किसी एक कुए में पड़कर अपधात कर लिया।

रुद्रा मरकर जयपुर नगर में चंद्रपाल राजा के घर पुत्री रूप में पैदा हुई। उसका कनकवती नाम रक्खा गया जिसका विवाह, सन्मुख बैठे हुए इन चंद्रावती नरेश वीरधवल के साथ हुआ। प्रियमित्र की भद्रा नाम की दूसरी स्त्री मरकर परिणाम की विचित्रता से व्यन्तर जाति की देवयोनि में व्यन्तरी पैदा हुई। एक दिन वह व्यन्तरी आकाश मार्ग से पृथ्वीस्थानपुर के ऊपर होकर जा रही थी, उस समय उसने प्रियमित्र और प्रियसुन्दरी को देखा-देखते ही अपने पूर्वभवकी स्मृति आने से उसके हृदय में उन दोनों के प्रति वैरभाव उपजा और वहाँ जाकर व्यन्तरी ने अपनी दैवी शक्ति से उनपर दीवार को गिरा दिया और फिर वह वहाँ से आगे चली गई।

वे स्त्री पुरुष शुभ भाव में मृत्यु प्राप्त कर राजन् ! प्रिय मित्र का जीव आपके घर में महाबल रूप में पैदा हुआ—और प्रियसुन्दरी का जीव वहाँ से मरकर वीरधवल राजा की पुत्री मलयासुन्दरी नाम से पैदा हुई। पूर्वभव के प्रबल प्रेम के कारण इनका इस भव में भी पति-पत्नी का सम्बन्ध कायम रहा।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-355-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 464-2783

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (Resi) 352-8387/9885

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Kolkata - 700 068
Ph: 472-0610

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street Kolkata - 700 001,
Ph: 235 2759 Fax: 033-252902

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

DHARAM CHAND SARAOGI
'Jain House' 8/1 Esplanade East
Kolkata - 700 069

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHREE SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and cables
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110 043, Ph: (O) 501-6527
(Resi) 545-3415, 542-3304
Mobile: 9811075330

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

H. R. ELECTRONICS

Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA

12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR

30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY

Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS

Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS

House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Kolkata - 700 001
Phone : 235 7312, (Shop) 230 1180 (Resi) : 241 6831

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

S. VINAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Kolkata - Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Kolkata - 700 073

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अangan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Ph : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

卐

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

Subhash
Projects and
Marketing
Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITH NATURE

Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Calcutta-700016 Ph:(033)245-7562. Registered Office: Subhash House. F-27 2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Lisor Road. Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metre, no less.

Building a floating pumping station on the fierce of Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproff Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला

१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़

कोलकाता – ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीस पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे

भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

卐

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी

कोलकाता

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
(It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha : Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti/ Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Bandyopadhyay Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi
******

We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)
******

Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45
Vol. XXV No. 11 TITTHAYARA February 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

卐

आचार्य श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन-३८२००९

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225